eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर का संस्कृत चिंतन

[1]विजय पाटिल
[1]शिक्षक सह साहित्यकार, उच्च माध्य विद्या गवाड़ी, जिला बड़वानी, म0प्र0

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

कबीर ने केवल जाति ही नहीं मूर्ति पूजा के विरुद्ध भी साहित्य में अपनी बात को प्रमुखता से दर्शाया हैं।हिंदू मुस्लिम के उन संस्कारों और रीति रिवाज प्रथाओं की भरसक आलोचना की जो उनकी दृष्टि में व्यर्थ थे। उनका मानना था कि ईश्वर को प्राप्त करना हो तो मन में सच्ची श्रद्धा भक्ति के भाव होना चाहिए। संत कबीर दास का जन्म पंद्रहवीं शताब्दी में काशी उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके जीवन के बारे में विस्तृत विवरण निश्चित नहीं है। कबीर के शिक्षण और तत्व ज्ञान में सूफी प्रभाव स्पष्ट झलकता है। उनके काव्य में हिंदी खड़ी बोली पंजाबी, भोजपुरी, उर्दू, फारसी, मारवाड़ी, भाषण का मिश्रण है। उनके अनुयायियों का सबसे बड़ा समूह कबीर पंथ के लोग हैं जो उन्हें मोक्ष और मार्गदर्शन करने वाला गुरु मानते हैं। कबीर पंथ कोई अलग धर्म नहीं बल्कि आध्यात्मिक दर्शन है। कबीर भारतीय मनीषा के प्रथम विद्रोही संत है। उनका विद्रोह अंधविश्वास और अंधश्रद्धा के विरोध में सदैव मुखर रहा है। उनके समय में समाज में पाखंड जात–पात छुआछूत, अंधश्रदा से भरे कर्मकांड सांप्रदायिक, उन्माद चरम सीमा पर था ।जनमानस धर्म के नाम पर दिग्भर्मित हो रहा था। मध्यकाल को कबीर की चेतना का प्रकट काल माना जाता है। उसी काल में अंधविश्वास के मुंहासो को चीरकर कबीर रूपी दहकते सूर्य का प्राकट्य भारतीय क्षितिज में हुआ।

बीज शब्द– संस्कृति, अध्यात्म, सहिष्णुता, अनीश्वरवाद, एकेश्वरवाद।

Introduction

कबीर भारतीय संस्कृति के विशाल वट वृक्ष है। जिसकी छाया में संस्कृति दर्शन परंपरा को विस्तारित रूप का अवसर मिला, और उनकी शीतल छाया में ही संस्कृति धर्मांधता की प्रचंड गर्मी से सुरक्षित रही। आपसी भाईचारा, धर्म सहिष्णुता, मानव मूल्यों का महत्व को जानकर अंगीकार कर पाई। कबीर का दर्शन संस्कृति पर उनकी शिक्षाएं और भी नूतन और प्रासंगिक हो जाती है। कबीर विद्रोही नहीं सनातन संस्कृति के अद्भुत ध्वजवाहक रहे हैं। उन्होंने विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का मार्मिक और तथ्यात्मक विश्लेषण करते हुए समाज को सीख दी है। कबीर के दोहे चिंतन और मंथन का आधार है। संत कबीर स्वयं के साथ समाज में मूल्यांकन करने वाले सर्वकालिक श्रेष्ठ व्यक्तित्व है। कबीर उपनिषद संबंधी अदेवेतवाद और शलाकीएकत्ववाद से गहराई से प्रभावित थे। उन्हें वैष्णव भक्ति परंपरा से भी प्रेरणा मिली थी, कबीर दास केवल जाति की ही नहीं अपितु मूर्ति पूजा के विरुद्ध भी बात की है। हिंदू और मुस्लिम दोनों के संस्कार और रीति–रिवाज और प्रथाओं की आलोचना की जो उनकी दृष्टि में व्यर्थ है। कबीर ने घर–घर वासी चेतन तत्व राम के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने राम को जीवन आश्रय माना है। अतः कबीर आज भी भारतीय संस्कृति में

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

दहकते अंगारे है। कानन कुसुम है। कबीर जिनकी भीनी भीनी महक और सुवास नैसर्गिक रूप में मानवी अरण्य को सुभाषित कर रही हैं।

कबीर का संस्कृती चिंतन–

कबीर बीच बाजार और चौराहे के संत है। वह जनमानस में अपनी बात को पूर्ण आवेग और प्रखरता के साथ करते थे । छह सौ वर्षों के सुदीर्घ प्रकटकाल के बाद भी कबीर हमारे व्यक्तिक एवं सामाजिक जीवन के लिए बेहद प्रासंगिक एवं सामाजिक लगते हैं। वह कहते हैं –

वो ही मोहम्मदवो ही महादेव, ब्रह्म आदम कहिए

को हिंदु तुरुक कहा, एक जिम पर रहिए।

कबीर मानवी समाज के विभाग निश्छल मन के भक्त कवि है। जो समाज को नरक स्वर्ग के मिथ्या राम से बाहर निकालते हैं। कबीर राम को जीवन आश्रय मानते थे। कबीर के बीजक में चेतन राम की एक सौ सत्तर बार अभिव्यंजना हुई है। कबीर कानन कुसुम है। जिनकी भीनी भीनी सुगंध और सुवास ने सृजक रूप से मानवी करण को सुभाषित कर रही है। कबीर भारतीय मनीषा के भूगर्भ के फौलाद है, जिसके चोट से धूर्त पाखंड धर्मांधताचूर–चूर हो जाती है। कबीर भारतीय संस्कृति का वह हीरा है ,जिसकी चमक नितिन नूतन और शाश्वत है ।संत कबीर की आध्यात्मिकता उनके समय में प्रचलित धार्मिक सिद्धांत के साथ इस्लाम की छवि की निस्वार्थ का संश्लेषण है। जिसमें हिंदू धर्म तंत्रवाद व्यक्तिगत भक्ति शामिल है। मध्ययुगीन भारत के भक्ति और सूफी परंपराके संस्थापक कबीर दास उत्तरी भारत में भक्ति आंदोलन के पर्याय बन गए हैं। उनको फरीद, संत रविदास, संत नामदेव के साथ भारत में भक्ति आंदोलन का अग्रदूत माना जाता है। ईश्वर पर उनकी आराधना और निर्भरता हिंदू धर्म में भक्ति और इस्लाम में सूफीवाद के विचार और दोजक है। कबीर को अपने समय में भारतीय संस्कृति के इतिहास में गतिशील बनाने का बीड़ा उठाया। उस समय गुरुत्वाद, कर्मकांडवाद, जाति, वर्ग द्वारा जनमानस को शोषण करने का बीड़ा उठाया सदन गुरु बहुवादी मुखौटा लिए बैठा था। सतगुरु और असद ्गुरू की पहचान क`लिए कबीर ने कुछ निष्कर्ष बनाए फिर भोंदू समाज को बदलकर उत्तरदायी समाज बनाया। कबीर का काव्य संसार भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर है। कबीर केवल सामाजिक सुधारवादी नहीं थे अपितु उन्हें तो उसे समय का सामाजिक क्रांति का अग्रदूत कहा जाता है। कबीर की सखीयों में उस समय के सामाजिक प्रचलनों के प्रति अस्वीकारिता का स्वर ही उन्हें तब के समय में भी प्रासंगिक बनाता है और वर्तमान समय में भी समीचीन सिद्ध करता है। संत कबीर की मानवतावादी विचारधारा में गहन आस्था उन्हें सर्वकालिक बनाती है। वर्तमानसमय में दलित विमर्श के नाम पर चल रहा वैचारिक मंथन वस्तुतः कबीर की सखियों का निचोड़ मात्र है। धर्म और समाज की दृष्टि में दलित विमर्श में गौण होती जा रही है। यही कबीर के चिंतन दर्शन की एक बड़ी सफलता है। गृहस्थ कबीर के घर पर संत, समाज चिंतको, गायको ,विद्वानों का जमावड़ा लगा रहता था। धार्मिकता, आध्यात्मिकता सामाजिकता के साथ संन्यासी होने का भाव भी एवं परिवार समन्वय के साथ स्वयं एवं राष्ट्र के विकास का उच्च भाव भी हो यही तो वह सीखा गए संत कबीर ओर उनकी सर्वकालीता का बोध उनकी काव्य में झलकता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

बेद मुआ रोगी मुआ सकल संसार।

एक कबीर न मुआ जेहि के राम आधार।

निष्कर्ष– मौजूदा सामाजिक व्यवस्था की सबसे अधिक आलोचना करने वालों और हिंदू मुस्लिम एकता की जोरदार वकालत करने वालों में कबीर का नाम प्रमुख है।कबीर ने भारतीय संस्कृति में मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा, पवित्र नदियों में स्नान, नमाज जैसी औपचारिक पूजा में भाग लेने वालों की कड़ी निंदा की है। वह मानव और मानव के बीच हर प्रकार के भेदभाव के विरोधी थे। उन्होंने ईद्ववर के निर्गुण रूप की पूजा की है ,जिसे वह राम, अल्लाह, हरि साहिब के नाम से पुकारते हैं। कबीर ने आध्यात्मिक, धार्मिक दार्शनिक एवं साधना स्तर पर समन्वय का संदेश दिया है। कबीर के अनुसार साधना से ही मूलतः मानव एवं प्राणी मात्र का आध्यात्मिक कल्याण है। कबीर के अनुसार पिंड और ब्रह्मांड से परे निर्विरोध विशेष तत्व है। वही सबसे परे परम तत्व है उनका कोई रूप नहीं वह घर–घर में समाया है। कबीर ने आध्यात्मिक प्रेम को लौकिक माध्यम से व्यक्त किया है। कबीर पर वैदिक विचारधारा वैष्णव विचारधारा का प्रभाव रहा। उन्होंने अपने साहित्य में एकात्मक अद्वैतवाद, गुरु भक्ति आध्यात्मिक, योग ब्रह्म स्वरूपों में श्रद्धा भक्ति उपासना के माध्यम से काव्य रचना को संजोया है। कबीर का दृष्टिकोण सुधारवादी ही रहा। कबीर ने किसी धर्म विषय एवं दर्शन की पताका ऊंची नहीं की है। कवि ने प्रेम भक्ति साधना में माया को बाधक माना है।

कबीर माया पापणी हरि सूं करें हराम।

कबीर दास का संस्कृती चिंतन हिंदू मुस्लिम संस्कृति पर अधिक रहा। उनके चिंतन उनके समय के प्रचलित धार्मिक सिद्धांत तक के साथ इस्लाम के छवि हुई ईश्वर का संश्लेषण है। जिसमें हिंदू धर्म तंत्रवादव्यक्तिवाद भक्ति शामिल है। दोनों के अनुयायी उस वैश्विक मार्ग का अनुसरण कर सकते हैं। कबीर के संस्कृति के प्रति विचार और कविताओं में एक विद्रोह था। उन्होंने हिंदू मुस्लिम संस्कृ ति के विषम में कुछ नहीं। कबीर ने एक नए दृष्टिकोण के साथ प्रयोग किया जिससे दोनों समाजों को लाभ हुआ उनके विचार प्रस्तावित हुए वह बहुत सरल और उपयोगी थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ स्रोत–

1. संत कबीर दास के लेखन का समाज और संस्कृति पर प्रभाव –सोहनसिंह धर्मा
2. कबीर भारतीय संस्कृति का हीरा जिसकी महक शाश्वत –जगदीश देशमुख
3. कबीर काव्य के स्रोत –यादव भागीरथ प्रसाद, अनुपम प्रकाशन पटना।
4. कबीर ग्रंथावली – त्रिगुणायतगोविन्दएड 2019, अशोक प्रकाशन कानपूर।
5. डॉ भवदेव पांडेय – गद्य कोश
6. संत कबीर का शिक्षा दर्शन –डॉ वंदना शर्मा, राष्ट्रीय शिक्षा 24/6/21